श्रुतज्ञान के संघात आदि भेद

श्री गोम्मटसारजी जीवकांड की ज्ञानमार्गणा प्ररूपणा में श्रुतज्ञान के 20 भेद बताए हैं। वहाँ पर्याय, अक्षर, पद, संघात, प्रतिपत्तिक आदि श्रुतज्ञान के भेद हैं। अक्षर ज्ञान के ऊपर 1-1 अक्षर की वृद्धि करते हुए जब तक मध्यमपद प्रमाण अक्षर नहीं होते, वह अक्षर समास श्रुतज्ञान कहलाता है। 1634,83,07,888 अक्षरों का 1 मध्यमपद होता है।

इसके ऊपर 1-1 अक्षर की वृद्धि करते हुए अंतिम पदसमास ज्ञान में 1 अक्षर की वृद्धि करने पर संघात नाम का ज्ञान होता है। कितने पदों की वृद्धि करने पर संघात ज्ञान होगा? तो इसके उत्तर में सम्यग्ज्ञानचंद्रिका टीका में दिया गया है कि संख्यात हजार पदों की वृद्धि करने पर संघात ज्ञान होता है। संघात ज्ञान के ऊपर एक अक्षर की वृद्धि करने पर संघातसमास श्रुतज्ञान होता है। ऐसे 1-1 अक्षर की वृद्धि क्रम से होते हुवे आगे संख्यात हजार संघात की वृद्धि करने पर प्रतिपत्तिक ज्ञान होता है। फिर संख्यात हजार प्रतिपत्तिक होने पर अनुयोग श्रुतज्ञान होता है। परन्तु ये संख्यात हजार की वृद्धि युक्त नहीं बैठती। क्योंकि एक-एक पूर्व के पद ही इतने नहीं है कि संख्यात हजार पद, इतने ही संघात, इतने ही प्रतिपत्तिक एक पूर्व के अंतर्गत आ सकें।

उदाहरण के लिए, सबसे अधिक पदों वाले आत्मप्रवाद पूर्व को देखते हैं। इसमें 26 करोड़ पद एवं 16 वस्तु हैं।

तब 1 वस्तु के पदों का प्रमाण $= \frac{26,00,00,000}{16} = 1,62,50,000$ होता है।

एक-एक वस्तु में 20 प्राभृत होते हैं। तब 1 प्राभृत के पद $= \frac{1,62,50000}{20} = 8,12,500$ होते हैं।

एक-एक प्राभृत में 24 प्राभृत-प्राभृत होते हैं। तब 1 प्राभृत-प्राभृत के पद $= \frac{8,12,500}{24} = 33854$ होते हैं।

एक-एक प्राभृत-प्राभृत में 4 आदि अनुयोग होते हैं। तब 1 अनुयोग के पदों का प्रमाण $= \frac{33854}{4} = 8463$ होता है।

याने आत्मप्रवाद पूर्व में 1 अनुयोग के कुल पद = 8463 हुए । तब इसमें संख्यात हजार पद वाला 1 संघात, संख्यात हजार संघात वाला 1 प्रतिपत्तिक, व संख्यात हजार प्रतिपत्तिक वाला 1 अनुयोग कैसे सिद्ध होगा। क्योंकि संख्यात हजार के स्थान पर 1000 भी मान लिये जाएं, तब भी 1 अनुयोग में $1000 \times 1000 \times 1000 = 1000000000$ पद होना चाहिए, जबकि यहाँ तो अनुयोग में मात्र 8463 पद ही हैं। जब अधिक पदों की संख्या वाले पूर्व में ऐसा है, तो कम पद वाले पूर्व में तो और भी कम पद होते हैं। उदाहरण के लिए अस्ति-नास्ति पूर्व के 1 वस्तु के 1 प्राभृत के 1 प्राभृत-प्राभृत के 1 अनुयोग के पद मात्र 173-174 पाए जाते हैं। प्रत्याख्यान पूर्व के 1 अनुयोग के पद 146 ही हैं।

इसी प्रकार प्रत्येक पूर्व के पद वस्तु, प्राभृत, प्राभृत-प्राभृत, अनुयोग में इस प्रकार देखे जा सकते हैं–

14 पूर्व	पद संख्या	1 पूर्व में वस्तु	1 वस्तु के पद	1 प्राभृत के पद	1 प्राभृत-प्राभृत के पद	1 अनुयोग के पद
सूत्र ➡	-	-	पद संख्या / वस्तु संख्या	1 वस्तु के पद / 20	1 प्राभृत के पद / 24	1 प्राभृत–प्राभृत के पद / 4
उत्पाद-पूर्व	10000000	10	1000000	50000	2083	521
आग्रायणीय	9600000	14	685714	34286	1429	357
वीर्यानुवाद	7000000	8	875000	43750	1823	456
अस्ति-नास्ति प्रवाद	6000000	18	333333	16667	694	174
ज्ञान-प्रवाद	9999999	12	833333	41667	1736	434
सत्य-प्रवाद	10000006	12	833334	41667	1736	434
आत्म-प्रवाद	260000000	16	16250000	812500	33854	8464
कर्म-प्रवाद	18000000	20	900000	45000	1875	469
प्रत्याख्यान-पूर्व	8400000	30	280000	14000	583	146
विद्यानुवाद	11000000	15	733333	36667	1528	382
कल्याणवाद	260000000	10	26000000	1300000	54167	13542
प्राणानुवाद	130000000	10	13000000	650000	27083	6771
क्रियाविशाल	90000000	10	9000000	450000	18750	4688
त्रिलोक-बिन्दु सार	125000000	10	12500000	625000	26042	6510
कुल	955000005	195				

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि यहाँ पर संख्यात हजार पदों का समुदाय संघात, संख्यात हजार संघात का समूह प्रतिपत्तिक, संख्यात हजार प्रतिपत्तिक का समूह अनुयोग नहीं हो सकता। बल्कि संख्यात पदों का संघात, संख्यात संघात का प्रतिपत्तिक एवं संख्यात प्रतिपत्तिक का अनुयोग होता है। इसके आगम प्रमाण के लिए गोम्मटसार ग्रन्थ की गाथा 337, 338, 339 देखिये। यहाँ मूल गाथाओं में संख्यात अक्षरों/पदों की वृद्धि मात्र का निर्देश है, संख्यात हजार वृद्धि का नहीं। गाथा 337 में जो 'संखेज्जसहस्स पदे' दिया है, उसका एक पाठ और उपलब्ध है जो 'संखेज्जपदे उड्ढे' है, जो ज्ञानपीठ से प्रकाशित ग्रन्थ में नीचे footnote में दिया है। (देखिए पृष्ठ 571) अर्थात् इन तीनों ही गाथाओं में संख्यात वृद्धि का ही कथन है, संख्यात हजार का नहीं। दूसरा प्रमाण – धवल ग्रन्थ की 13वीं पुस्तक में इन श्रुतज्ञानों की विस्तृत चर्चा है। वहाँ पर भी संख्यात हजार पदों का 1 संघात ना कहकर संख्यात पदों का 1 संघात ज्ञान होता है, ऐसा कहा है। देखिए धवल पुस्तक 13 पृष्ठ 267 – '**होंति पि संखेज्जाणि पदाणि घेत्तूण एगसंघादसुदणाणं होदि।**' अन्य भी पृष्ठ-269। इसी प्रकार आगे भी संख्यात संघातों से 1 प्रतिपत्तिक व संख्यात प्रतिपत्तिक से अनुयोग बनता है – ऐसा कहा है।

इस तर्क व आगम प्रमाण से ऐसा दिखता है कि गोम्मटसार ग्रंथ की टीका में संख्यात के स्थान पर संख्यात हजार आ गया है। इसका कोई स्पष्ट कारण तो नजर नहीं आता, पर यह त्रुटिपूर्ण अवश्य भासित होता है।

विद्वानगण इस पर विचार करें। यदि उपर्युक्त विवेचन में कहीं भूल हो, तो कृपया अवश्य बताएं जिससे हम अपनी भूल सुधार सकें।

विकास जैन
53, मल्हारगंज, इंदौर, म.प्र.
094066-82889
vikasnd@gmail.com